अश्विनी भिड़े

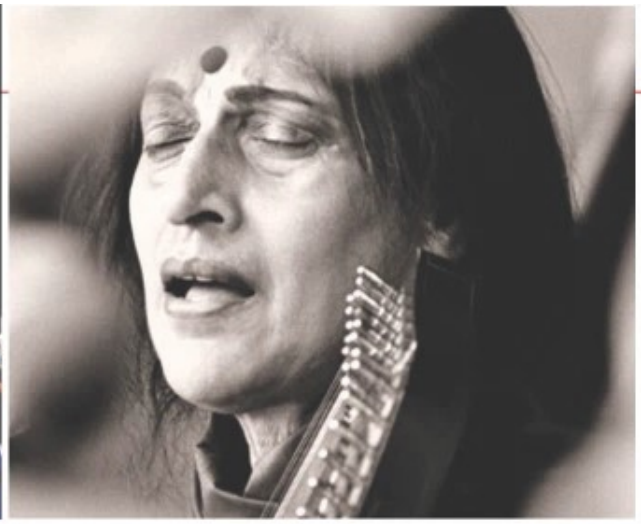

किशोरी अमोणकर

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराही गई वहीं भजन गायन में भी उन्होंने अपनी गहरी छाप छोड़ी। व्ही शंताराम की महत्वाकांक्षी फिल्म 'गीत गाया पत्थरों ने' का शीर्षक गीत किशोरी अमोनकर ने ही गाया है। किशोरी अमोनकर के शिष्यों में विदुषी माणिक भिडे तथा सुपुत्री डा. अश्विनी (भिड़े) देशपांडे, आरती टिकेकर, रघुनंदन पांसेकर, देवकी पंडित और गुरिंदर आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

उस्ताद अल्लादिया खां के बेटे उ. मंजी खां का जन्म सन् 1880 के आस-पास हुआ था। उन्होंने अपने पिता उ. अल्लादिया खां और चाचा हैदर खां से तो सीखा ही, उस समय के एक और प्रसिद्ध गायक उ. रहमत खां की गायकी को भी आत्मसात् किया था, जिसके कारण पिता उ. अल्लादिया खां उनसे नाराज रहते थे। इस घराने में ठुमरी गायन का प्रचलन न होने के बावजूद मंजी खां ठुमरी गायन अत्यधिक रुचि के साथ करते थे। वे सुगम संगीत भी गाते थे..... गीत और गज़ल गायन में भी रुचि लेते थे। स्वाधीनता संग्राम के समय उनका गीत 'चरखे की करामात से लेंगे स्वराज' काफी लोकप्रिय हुआ था और प्रभात फेरी के समय खूब गाया जाता था। विद्रोही तेवर, खुले और उदार हृदय के इस वरिष्ठ गायक का निधन, 1937 में हुआ। उनका वास्तविक नाम नसिरुद्दीन खां था।

उ. अल्लादिया खां के दूसरे पुत्र और शिष्य उ. शमशुद्दीन खां उर्फभुर्जी खां ने अपने पिता की परम्परा का कठोरता से पालन करते हुए विदुषी धोंडूताई कुलकर्णी, पं. मल्लिकार्जुन मंसूर बामन राव शिडोलकर, गनपत राव जोशी, मधुसूदन कनेटकर और मौका बाई शिरोडकर जैसा प्रतिनिधि गायक संगीत समाज को दिया। मधुसूदन कनेटकर की शिष्या मंजरी असनारे आज की बहुचर्चित गायिका हैं।

1927 को जन्मी विदुषी धोंडूताई कुलकर्णी ने जयपुर घराने के खयाल गायन की शिक्षा उ. अल्लादिया खां के भतीजे और शिष्य उ. नत्थन खां, अल्लादिया खां के पुत्र उ. भुर्जी खां, विदुषी लक्ष्मी बाई जाधव और उ. भुर्जी खां के निधन (1950 में) के बाद उनके पुत्र उ. अजीजुद्दीन खां और अंतत: विदुषी केसरबाई केरकर से प्राप्त की थी। विदुषी धोंडूताई कुलकर्णी को महाराष्ट्र गौरव और केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। धोंडूताई का वास्तविक नाम दुर्गा बाई कुलकर्णी था। उन्होंने उ. अल्लादिया खां से सीधे तौर पर नहीं किंतु उनका गायन सुन-सुन कर काफी कुछ सीखा था। यही बात विदुषी केसरबाई केरकर के संबंध में भी कही जा सकती है। धोंडूताई जब केसर बाई के पास गईं तो केसर बाई 80 वर्ष की हो चुकी थीं। धोंडूताई भी मंचों पर कार्यक्रम देने लगी थीं। ऐसे में केसर बाई गायन में सहयोग के लिये उन्हें अपने साथ मंच पर बैठाती थीं। इस सामीप्य का लाभ उठाते हुए धोंडूताई ने अपनी गायकी को समृद्ध किया था।

उ. अल्लादिया खां और उनके सुपुत्रों के शिष्य पं. वामन राव शिडोलकर इस परम्परा के प्रतिष्ठित गायक हुए। उनकी सुपुत्री विदुषी श्रुति शिडोलकर काटकर आज की सुविख्यात गायिका हैं। भातखंडे संगीत संस्थान (लखनऊ) की उपकुलपति श्रुति ने अपने पिता के साथ-साथ भुर्जी खां के सुपुत्र अजीजुद्दीन खां से भी सीखा है। विदुषी माणिक भिड़े की सुपुत्री डा. अश्विनी भिड़े देशपांडे आज की प्रतिष्ठित गायिका हैं। अपनी विदुषी माता के अलावा पं. नारायण राव दातार और पं. रत्नाकर पई से भी इन्होंने संगीत का ज्ञान अर्जन किया है। अप्रचलित रागों के अलावा अप्रचलित तालों में भी ये प्रभावशाली गायन प्रस्तुत करती हैं। विदुषी माणिक भिंडे और डा. अश्विनी भिडे देशपांडे ने विभिन्न रागों और तालों में अलग-अलग प्रकार की अनेक रचनायें भी रची हैं। पं. रत्नाकर पई के अन्य शिष्यों में डा. मिलिंद मालशे, शामली जोशी और मीनल देशपांडे अच्छा गा रहें हैं।

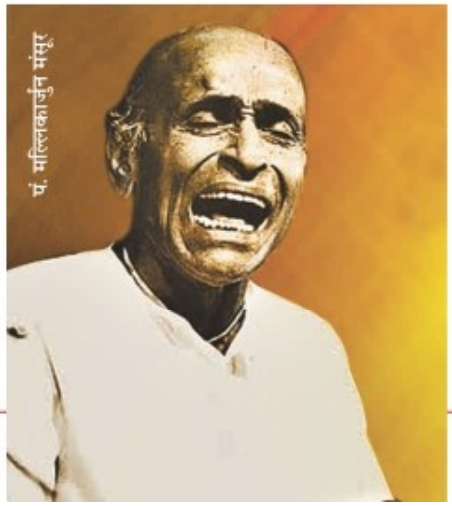

पं. मल्लिकार्जुन मंसूर

जयपुर-अतरौली घराने के महान गायकों में एक बहुत बड़ा नाम पं. मल्लिकार्जुन मंसूर का है। धारवाड़ के मंसूर नामक ग्राम मे 31 दिसंबर, 1910 को जन्मे मल्लिकार्जुन मंसूर ने अपनी संगीत शिक्षा का शुभारम्भ तो ग्वालियर घराने के पं. नीलकंठ बुवा (मिरजवाले) से किया, किंतु उसे विकसित किया उस्ताद मंजी खां और उ. भुर्जी खां के शिष्यत्व में। संगीत रत्न, गंधर्व रत्न, पद्मश्री, पद्मभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, कालिदास सम्मान और देशिकोत्तम से सम्मानित पं. मंसूर ने 'वचन' और 'रगड़े' (गद्य प्रधान भाग) को संगीत में ढालकर लोकप्रिय बनाया था। चन्द्रहास नामक फिल्म का संगीत निर्देशन भी उन्होंने किया था। 15 वर्ष की उम्र में पहला सार्वजनिक कार्यक्रम देने वाले पं. मंसूर का पहला ग्रामोफोन रेकार्ड 20 वर्ष की उम्र में बन गया था। संपूर्ण मालकौंस, काफी कान्हड़ा, बहादुरी तोडी, खटतोड़ी, आडम्बरी, बिहारी, कबीर भैरव, पटबिहाग और तेज कल्याण जैसे लगभग तीन सौ रागों के ज्ञाता पं. मल्लिकार्जुन मंसूर को कर्णाटक संगीत नाटक अकादमी ने दो बार सम्मानित किया था।

कर्णाटक विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधि से सम्मानित किया था। केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें रत्न सदस्यता से विभूषित किया था। राज्योत्सव सम्मान तथा कला रत्न सम्मान जैसे कई अन्य प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित पं. मंसूर के यशस्वी सुपुत्र राजशेखर मंसूर भी इस परम्परा के प्रतिष्ठित गायक हैं।